Part – ii

प्रश्न (11.) चिन्तन - प्रवाहमे संकलित ‘ चिन्ता ’ शीर्षक कविताक चिन्ताकेँ स्पष्ट करू ।

उतर- *स्वनाम धन्य कवि डॉ0 धीरेंद्र नाथ मिश्र भाषाशास्त्री , कथाकार छथि । हिनकामे समाजिक जन - जीवन चिन्ता विशेष रूपसँ पाओल जाइछ । गाम - घरसँ शहर - बाजारक एक सँ - एक , छोट सँ - छोट बातक चिन्तन मननसँ काव्य गढैत छथि । कल्पनाक उड़ान कम यथार्थक विशेष लग हिनकर रचना होइत अछि । एहि क्रममे चिन्ता शीर्षक कविता अछि ।*

चिन्ता चिन्ता कथीक चिन्ता

घरक चिन्ता बाहरक चिन्ता

एत चिन्ता ओत चिन्ता

जतइ देखू उतइ चिन्ता

चिन्ता सर्वव्यापी अछि । चिन्ता घरसँ बाहर धरि खैहारि रहल अछि । पेटक चिन्ता त ' सभकेँ रहैत छै । मुदा मेटक चिन्ता लोक केँ सेहो होयबे टा करैत छै । भोग आ रोगक चिन्ता सेहो सर्वव्यापी अछि ।

बेटा - बेटीक चिन्ता , कन्यादान आ पढाइक चिन्ता सभकेँ होइते टा छैक । सर

समाज , कर कुटुम्बक चिन्ता सेहो सतत् लगले रहैत अछि । अर्थाभाव मे छी त ' बैंक सँ लोन लिअ त' ओकर सर्तक चिन्ता । जँ सर्त मे फेल भेलहुँ त ' गर्त मे पहुँचा देत । नेता सभकेँ सदैव भोटक चिन्ता , देश - देशाक चिन्ता लागल रहैत छन्हि ।

राति बितइ अछि दिनक चिन्ता

दिन बितइ अछि रातिक चिन्ता

एतावता प्राय: सभकेँ दिन- रातिक चिन्ता लागल रहैत छन्हि । जँ दैनिक मजदूर अछि त ' ओकरा आओर चिन्ता लागल रहैत छैक ।

चिन्ता त ’ चोरा - नुक्की खेलाइत अछि ओ पल - पल देखार होइत अछि आ पल - पल नुका रहैत अछि । मनक चिन्ता जे एकटा भेल त ’ आब दोसर कोना हैत तकर चिन्ता । जीवनक चिन्ता आ बूढापामे मरणक चिन्ता होमय लगैत छै । यावत जीवन तावत चिन्ता । तेँ धैर्यवान लोककेँ कोनो चिन्ता नहि होइत छैक।

चिन्तासँ मुक्ते जीवन थीक । चिंता त ’ चिता समान भस्म क ’ दैछ ।